आचार्य इन्द्रनन्दि

जीवन-परिचय : इन्द्रनन्दि नाम के अनेक आचार्यों का परिचय ग्रन्थों में मिलता है। प्रसिद्ध इन्द्रनन्दि श्रुतावतार ग्रन्थ के कर्त्ता हैं। इन्होंने अपना परिचय और गुरु-परम्परा का कोई उल्लेख नहीं किया है।

इन्द्रनन्दि के समय के बारे में भी कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता है, परन्तु ये विक्रम की 10वीं शताब्दी के विद्वान माने जाते हैं।

रचना-परिचय : इन्द्रनन्दि की एक मात्र कृति 'श्रुतावतार' है।

श्रुतावतार : यह ग्रन्थ मूलरूप में मणिकचन्द्र ग्रन्थमाला से 'तत्त्वानुशासनादि-संग्रह' में प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ में संस्कृत के 187 श्लोक हैं। दिगम्बर सम्प्रदाय में जो श्रुतावतार लिखे गये हैं, उनमें इन्द्रनन्दि का श्रुतावतार अधिक प्रसिद्ध है। इसमें दो सिद्धान्तागमों (धवला और जयधवला) का परिचय भी दिया है।